

હેસા હેસા આપુ હિરાના
હિંદુ ધોનહુ મયસંદ મયસાગ

વંદાવાલી

INDEX

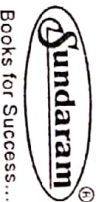
25/07/19

Name : _____

Std. : _____ Div. : _____ Roll No. : _____

Sub. : _____

School : _____



Sr. No.	Date	Subject	Page No.	Sign.
		કવીર		
		વિશ્વ, મુનિમિત્ર, ગુરુકેવલ		
		અન્ય સંગ કવિ		
		શુક્રી + ખાચકી		
		ઉત્તમીવાસ		
		મુનુદરકાળ		
		વિનયપત્રિકા		
		અયોધ્યાકાળ		
		કલ્પકાળ		
		મુનુદરકાળ		
		સુમરવલિમાર		
		અન્ય કલ્પકાળ-કવિ		
		વિલસી		
		કેશવદાસ		
		પદ્માવતી		
		અન્ય		

મિત્ર, બાથ, હેસવન્દ, મિત્રાપત્ર,
અસીર, કુમલો, વંદવરવાલી, રાસો

कविर

१) लाठी मेरे लाठ की,
जित देखे तित लाठ।
लाठी देखन के चली,
मेँ भी हो राई लाठ॥

२) पल के कुँभ, कुँभ के पल
बाहर भीतर पानी।
फूटा कुँभ पल पलहिँ समाना,
इहे लखे कहे बियानी॥

३) जो उल्ला मेँ आये,
फूल्या मेँ कुमिआई

४) देहना चाहिँ देखे विराना हँ।
यह समार कागज की फुड़िया,
धुँव पड़े धुलिँ जाना है॥

५) आया अठाठबिनी हस आनी।
निरगुन फौस लिँ कर डेले,
बोले समुही बानी॥

Sr. No. Date Subject Page No. Sign.

विद्यार्थी का नाम :
कक्षा :
दिनांक :
पृष्ठ संख्या :
विषय :
कविर

६ कमलस्य मृत तिलं लोच, वयना
वास नाम का अक्षर है आना

७ ज्ञात भ्रमं की भूमि कसौ
लेखनी बस वनबाढ़।

धरती सब कागद कसौ
हरिबुधा बिधा न भाई।।

८ निरञ्ज बस अपहूँ है झाड़।
अविगत की गति लोचि न भाई।।

ये भूलो दोखा
का मू कहीट।
गुन में निरञ्ज
निरञ्ज में गुन
बाँट लोचि
कसो कहीट

९ भवा सुझाये गुल जही,
जो गुल है को लोच।

लोच तुझको भैंपले,
कसा जागत है ओर॥

१० हरि भवा प्रीत, में हरि की कहरिया।

११ तुलहिन् गोवतु अंगलचार,
हम धरि आ बजा बस अंतरार॥

१२ बालस आओ लम्बा रोह रे।
गुन कि दुखिया देह रे॥

१३ जो बिछोड़ है फिराये से, में सब
अपने पर - वपर फिरते।

१४ लम्बा बार है लम्बे में
होम को डल जाहि कसा॥

१५ लोच बिनु बाँस ओर लिखा
फिर जहि चँच, बात जहि निर्दिखा,
लगाफ - लगाफ के ओर किया॥

१६ जन अकत हुआ लब कसो बोले।
भवा आहव है वपर आही,

बाहर नैना कसो खोले॥

१७ नैना की कवि कोठरी,
पुनरी पलंग सिंहाय।

पलकों की चिक डारि के।
प्रिय को लिखा निझाय॥

१८ लोच लो हरिनाम लोच
जो जौ लोच लोच।

पारब्रह्म को खेला
जो अर आव लो आव॥

19) जब मैं था तब हरि नहीं, नि।

अब हरि हैं मैं नहीं।

प्रेम गली अति ओकरी,

नाम दे न भसाई ॥

अरे हरि जननी
मैं बाबक
नाम।

20) कबीर यह घर प्रेम का,

खाना का घर नाहि।

शीश उगार लाय करे,

मो प्रेमे घर आहि ॥

21) प्रेम न वादी उपजे, प्रेम न हार सिखाय

बोला प्रजा ऐहि कहे, अस्मि देहि ते जाय

अरे पोथी पढ़ि-पढ़ि उठा मुवा,

पंडित भया न कोय।

होइ अस्मर प्रेम का,

पढ़ि मो पंडित होय ॥

23) अमलक है
शिवोप
चतुर्भुज आदि
ब्रह्म डाकी ॥

22) कबीर कलामास का, मुनिया अज कालें

बाले नाम की जेबड़ी, जितें संचें सिन जाकें

अरे पकरी टेक कबीर भवनि की,

काजी रहे क्षय आहि।

23) कोकर, पाथर जोरि के, भक्तिक यहि बनाया

तो पढ़ि मुक्ता बोल के, असा बहिष्ठा

हुआ सुदय।

24) अमलु गगनसंझा खर कोल,

अमलु झरे अद। अरु उपजे,

वैकनाली रस पीत।

25) गोलन। पवन। दोनो सिनसे,

कहाँ गया जावा सुखरा

अरे पाहल भुज हरि मिले, लोके भुज पहर।

नाते व। चाकी अली-प्रेम खाए अंजार।

26) भैंड भैंडाट, हरि मिले,

अस कोइ के भुंझाय।

बार-बार के भुंझते,

भैंड न संकुठ लाय ॥

27) भावा फेरत मुन राया,

भिरा न मन का फेर।

कर का मन का डहि दे।

मन का मन का फेर ॥

28) जो तु बाबल बसली का पाया,

आन वाट हरे क्यो नही आया।

उभे जो हूँ तुम्हें तुम्हारी का आया,
भीतर खतना क्यों न कराया।

उड़े जानि पाति फूले नहीं बेड़ी।
हृदि को शीत, जो हृदि का होड़ी॥

उड़े उभरे इन दोऊन बह न पाई
हिन्दुन की हिन्दुआई देखी
तुलकन की तुलनाई

उभे हिन्दु कहे रास होसाया
मुसलमान बहमाना
आपस में फौड जोर बेरा है
भारत को न जाना

उड़े हम धर आस आपना,
जिया मुझा हा था,
अब धर जहाँ लास का,
जो चले हमारे आस॥

उभे आया मुझे न मन मुका,
भरि भरि गया भरीर।
आसो दरवाजा का मुझे,
जो कहे जाया कबिर॥

५७ भाई के अर जिवि है, जिना मिलन
बीसो कुँजद दाऊ।
५८ वक्की पाति खात है, लकि काढ़ि खात।
जो नर वक्की खात है, लकि कोन हवात॥

५९ भुग जो देखन में चला,
भुग न मिलिया कोय।
जो दिल खोज आपना,
मुझसा भुग न कोय॥

६० भाई इतना दीसि, जसि कुटुम के भाय।
में भी सुखा न बहे, साधु न सुखा जस
६१ कल कहे ओ आन कहे
आन कहे ओ अल।

पल में पवलय देयनि,
जहुरि करे गो कल॥

६२ ऐसी बानी बाणी, मन को आप। खाय।
औरन को मिलन करे, आपहुँ मिलन होय॥

६३ सुखिया अर भँव है, खर अर भँव।
दुखिया दास कबिर है, जहाँ अकि बोर॥

५५) चरणी चाकी देख कर,
 दिया कबिआ बोया।
 दो पाछ के बीच में,
 बाधुन बच्य न कोय ॥

५६) में कहला उमंखिल की देखे।
 तू फहला कावाक की लेखे ॥

५७) मैं तो आई
 आई आन की
 आधी दे।

५८) मैं भिचरा है कूपजल,
 आया बहता नीर।

५९) जो तुम आन्यो तर्हि है,
 वह निज श्रद्धा-सिचार।

६०) अस्मि कावाक छुआं नहिं,
 फलस रहि नहिं हाथ।

६१) नैया सिच नमिया डूबती जाय।
 (आन) (विषय-वासना)

६२) कवीरनाम की उठती बानी।
 बरबरे फसल, अीरे पानी ॥

६३) समजकर जागी अवि
 नारियाँ जल कोयला आई
 (बुलाधार)
 (कन्या पिछला
 नारियाँ अन्ध)

विफड

६४) भव राग लंग बलाव लम,
 बिरह बजाव निव।
 और न कोई भुनि सके,
 के आई के चित ॥

६५) बिरहा भुलहा जिनि कछे,
 बिरहा है भुललान।
 जा धर बिरह न संचर,
 पते धर बरह सजान।

६६) मैं खियन ते कौड़े पड़ि, पंथ निहदि-निहदि।
 जिहया ते छाला पड़ा, रास मुकदि मुकदि ॥

६७) तंनि-तंनि कन्त न पाइल,
 जिनि पाया निनि बौड़ि।

६८) भुखिया भव संसार है

६९) कवीर प्रेम न चाधिया,
 चधि न लिया भाव।
 भुने धर का पाहुनों,
 उये आया तूँ जाव ॥

७०) मैं ते करता ते भया,
 भुझ स बही न हूँ।

ॐ कवीर सुखिन आर है
 और अकल पंजाब।
 आदि अन्त सब मोक्षिया,
 पूजा देख्यो काल ॥

५) छोटी अक्ष तो देखियो,
 नाम नाम है छोटि।

१) अंतर्गत की महिमा अन्त, बिभूतदल

अन्त किआ अपकार।
 लोचन अन्त उवाडिया,
 अन्त दिखावनहार॥

२) आया दीपक नर पतंभा,
 अक्षि - अक्षि पड़े इक्ष्वा।
 कहे कवीर बुक जाल ते
 एक आध उबरत ॥

३) पीछे लागी आइ था, लोक वर के आशी।
 आगे ते अदबुके सिखा, दीपक दीसा हाशी॥

४) दीपक दीया लेल अरि, गति पड़े अथट।
 पूजा क्रिया बिभूतना, छहारे न ओरों हटै॥

५) जगदया बाद पूरा का और बना अरि अंग

अन्य अक्षि

१) जाति ओछा पाति ओछा,
 ओछा जन्म हुआ।
 राजाज की सेवा कीन्ही,
 कहे शिवदास चमार॥

२) प्रभुजी... तुम चंदन लस पाणी,
 आवी अंग अंग लस अमानी
 पद ओढ़े छा पाइये

३) दादू पद ओढ़े छा पाइये,
 आखी कहे का होइ।
 अति प्रेममयी ओढ़्यो,
 लत न चीन्हा कोई॥

॥ दादू दयाल

॥ दादू दयाल

सुकी लक

१) आनुष प्रेम अघेउ वैकुंठी,
नाहि ते कह छार एक सुंठी।

२) प्रेम पहार कठिन सिद्धि नाना,
मो ते चढ़े मिस जो चढ़ा।

३) अरे तो क्यों, जिओ एक भावा।

४) मुनि अंदम राजा तब हेरा
प्रान प्रान छट छट यहै बसा।

५) प्रीति अकेली बेसि चढ़ छाना,
दूबर बेत न अंचरे पावा।

६) हां रानी, तुम जोडी जिखारि।
आहिहि ओहिहि, कैन चीन्हारि॥

७) ना हां भरा क चारु राजा
ना ओहि नरक भेसि छिछु काज

चाहो ओहिकर मनसज पावा

८) यह तन जानो छार के
कहे कि पवन उड़ा
भक्त तेहि मारा अहि परे
कन्त धरे जहे पाव

९) जे जे जे जे जे जे जे जे जे
उहे वंदन विरु पछाना।
चाहिहु पवन झकोरे आनि,
जंफा ~~झकोरे~~ दाहि, पराका जाबि॥

१०) बरमे अवा झकोरे झकोरे,
ओर दुइ के चुरे अस ओहि।

११) पिर ओ कहेहु अंदमजा,
हे ओना हे कावा।

१२) मो धमि बिबहे उरि सुई,
तेहिक धुआं दमहि जावा॥

१३) पुछ्य नखल भिर अपर आवा।

१४) मोहि विनु नाह भंदि को छावा॥

१५) मो कोयला अइ कन्त अनेहा,
गोला ओरु जहा नहि देहा।

१६) रकत न रहा बिबहे तन जरा।

१७) मरुअप कवि यह ओरि भुजवा,
भुजा मो पीर प्रेम कर पावा।

१८) जाइ लछ रकत के लेई,
आहि प्रीति नयन न जे झेई।

૪ મુઠમળ કમિ ડો પ્રેસ કા,
 ના તન રક્ત ન ઓંચુ,
 ડોરિ મુંદે દેસા તેરિ હંસા,
 મુજા તે આંતે ઓંચુ ॥

૩ કોઈ ન રહા ડાગ, રહી કહાની
 મે ઘાનિ કો પુરુષ ખસ બેરોગે ડામુ,
 ફૂલ મોં તે મરે ન લાચુ,
 કે કહે ન ડાગલ ખસ લેચુ,
 કેરે ન ડીજા ખસ મોલ ॥

૮ ખેરિ દિન કમન ડ્યોરિ મિરસક,
 લહો ડ્યોરિ ડ્યોરિ મરે મરે,
 મેરિ મરિ નસલ લીપ તેરિ ડ્યોરિ,
 રતન પલમથ મરિ મરિ ॥
 ૫૮ મિની ગાવન હેમ ગા રૂરિ,
 મુંજર ગાવન મેરિ મિર મરિ ॥
 ૩ ગા તલ લોક, ખેરિ તેરિ કાચા,
 મુજા દેસુ મરે કે લાચા ॥
 દસમે દુઆ લોક કે લાચા,
 ડોરિ દિસ ડો લાચ કો લાચા ॥

૫ તન મિતર અન ગાગી કીજા,
 દિય મિંચલ મુચિ પલમિની ચીજા ॥

૭ તે ગાની મન લેચુ મિચાની,
 ડોરિ મરે રહના મિન ચરિ,
 મારુ નાનલ લોચિન ડોરિ લોચિ,
 લાકન મેચુર ન મિસર લેચી ॥

૨ પાની મરે આપરિ ખમિહારી,
 મળ મેચુ પલમિની રોચી ॥

૩ પલમિની કહે દુચ તર મીત ॥

૫ રતન લુગા મિનહ લાચન મેરિ,
 મેર ન લુગો મો લાચ મેરે ॥

૬ મુચિ મેચુ ન મિમમે લીડ
 લે દિય લાચ

૭ કેત મિચાપ દોરિ તેરિ પાચા

૮ મુનિ મિંગા દોર મેર લેચા

૯ રાલે લીચા લીજા નરિ ખાચા

१ अहं कंसुद्धी सुने नो कोइ ।
हिरण्य सोल खुला ओहि होइ ॥

२ चार दिना की चाँदनी,
फिर अँधियारा पास

— अनुशासक कंसुद्धी
सुख सुलभा

३ — कंसलनाभा, आयसी कलाप

तुलसीदास

कलियुग

१ निराचार जो श्रुतिपथ त्यागी ।

कलियुग भोई ग्यानी नो बनागी ।

आके नख अके पाटा विभाला ।

भोई नापस प्रसिद्ध कसिकाला ।

२ गोल न दास न भद्र कलि,

केवल दण्ड काल ।

३ विष्ट निरदृष्ट लोचन कामी ।

निराचार भूत सुकरी न्यासी ।

४ कलि बानहि बार दुपल पड़े ।

बिनु अन्न दुखी भव लोका भरे ।

५ खेरी न किमान को, शिखरी को न शीख बसि ।

बनिक को बन्धु, न चाकर को चाकरी ।

जीविबानिनि लोका, भीदयमान ओचवस ।

कोरे एक एकन को, कहाँ जाई को भरी ।

६ परितः परमान्न पचाई दुखी दीनवंधु ।

दुखित पवन पशि, तुलसी टहा करि ।

७ तुलसी तुलसी, एक अनाम धनस्याम हीरे ।
आनि अडिगाले रे, बड़ी है आनि पर की ।

॥

एक शूण रेखुपति कायनाला।

राजराज का हठि बहिः व्या

अहं भुङ्क्ते अथ दीकृत्य भवति॥

मैंने किरण कोऊ दुखी व बीबा, माना माना
व कोऊ अगुछ व कोझावहीन।

[illegible]

१५ ३३ ऑक्टोबरा रोज़ रात्र ५:३० ।

[illegible]

14 216 372, 216 4234911/

157 ~~पृष्ठ~~ ३१० अठ्ठा आठ्य किताब फ़ारसिनी

[illegible]

અવકાશ પ્રકાર અગ્નિ દુર્ગતી ॥

17) कान विधि अंतिम वाली पंक्ति।

ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਰਾਜਨੇਤਾ ਰਾਜਾ ਜਾਣੀ।

१४) वास-अर्थानि अतः परे अकं वापि ।

सकल परमार्थों के आविर्भाव ॥

कल, अवस्था एक पक्ष।

बज्रयुग कहें आदिह कहें काका।

आइ की बेटी को बता न एयाहव

काई के जगि विगार न भोऊ

X X X
ऑन के खेबा, जसगी को आदवा

[illegible]

207 मेरी जानि फँनि न - चढा काइ की

जानि पति।

काल को

ਕੇਯੋ ਯਾਕਿਸ਼ ਭਾਤ ਯਿਯ ਸੁਯਾ ਫੁਲਕੀ

श्री गुरु आर्य नारायण आचार्य

२३) भुक्तिमा भुक्ता नो चाह्मिह । ननु हि हिंस्रः ।
यान पात्र को एक ।
प्राप्ते योगे समकरो अंगे,
पुत्रासी अहित विवेक ।

२४) पनहित अहिंस धर्मस नहि आर्क्ष ।
पत्रपीडा भक्त नहि उद्यमादि ॥

२५) विमल धर्म यह अनुचित एक ।
वैष्णु विवाद नडेई असिभेक ॥

२६) नाम भो बडे है कौन
भोभो कौन छोटे
नाम भो छोटे है कौन
भोभो कौन छोटे

२७) जिन्ह हरिकथा भुनि नहि कथा
अवन दंड उग्रिभवन समाना

२८) जो नहि करे नाम गुन गाना
उहि भो पादु उहि समाना

२९) जब जब देखे धर्मस के हासि
गार्ह अमर अक्षय अहिंसाजी
तब तब प्रभु करे विविध भोगी
हमहि ध्यानिधि भजजन पीरा

३०) अगुन अगुन दुहु अक्ष समकपा
अकथ आवाध अनादि अनुपा

३१) शिवद्रोही अस नाम कलवा
भो नर मोहि अपनाहु नहि आवा

३२) करम प्रधान विमल कवि राखा
जो अस करइ को लक्ष फल पावा

३३) होइ है मोई जो नाम रसि राखा
को कवि लके चरवै नाराय

३४) पुत्रासी घर जन बीच ही
नाम प्रेम पुर छोडि

३५) भुधे भन भुधे सचन
भुधे भन कर दुगा

३६) पुत्रासी भुधे भक्त विधि
रघुवर प्रेम प्रभुति

३७) गोरख उवाचो जेब, अवाति अवाचो जेब

36) बेवहिनं अवन्ति माता मरु नाहि
37) राम अवतु दोड मुल भूम जानी

38) ईश्वर अंघा जीव अविनाशी

39) परमात्मा श्रद्धा नर कृपा
होइहिं रघुकुल भुक्ता भूषा
40) राम के पंथ, कृपान के धारा

41) दासिनी दम्प रही धन आदि
खल की प्रीति यथा हिय नाहि

42) कहि न होऊं नहि वचन प्रवीन
भक्त कला भव प्रिय होइ

43) भाषा वद कहि के भोई
भोरे मन प्रदाव जेहि होई

44) का भाषा का भक्त
प्रेम चाहि भोव

का ल जो आर्य कसमि
का जे करिऊ कुसाय
45) किरति भक्ति भूत भक्ति भोई
सुखसुखि भक्त भव करहि होई

46) कहि कहि कोटिक कपल कहानी
47) कटकटिहि भक्त विकट भट्टा भक्ति
बहु कोहि कोटि ब्यापति

48) चरन चार परकन चपाक

49) कर्ण कर्ण दुर्वास रावन

50) तुलसी पावस के भक्त
धरि कोपिजन भोज
भव दो दादुर धोखि
हमहि धुलिहै कौन ॥

51) राम कहतु चरु, राम कहतु चरु
राम कहतु चरु, भाई रे।

52) जेवन जाणु रह जेवन केना।
जैसे परम कृपन कर भेना ॥

53) राम नाम मनि दीप बक, जेहि देहरीहर।
तुलसी भक्ति लाहिरहु, जो चाहसि उभियार।

54) सब उपमा कवि रहे तुलसी।
कहि पतनो द्विदह कुमायी ॥

5) कविता करके तुलसी ज लखे, को कविता लखि पा तुलसी की कला।

उके जब तुके विमलप मजहुँ कुरमानु।

उके जिहि अमोघ अकृपति कर बाजा।

तेहिं अति चलेहु हनुमाना॥

उके राम को रूप निहारति जानकी।

कंजान के जग की परछाही॥

5) सचिद ~~चक्र~~ चक्र चक्र लीनि ~~जो~~ जो
शय दोन

सुन्दरकाण्ड

5) अमरिच ~~चक्र~~ चक्र लीनि ~~जो~~ जो

प्रिय बालहिं शय आस

होइ वैजोहि नाम

6) तपस पाप साहं कपट दुहल जाति निर
करुं मदय मेहि आधु अमाना॥

6) उहै अमुनी तह अचपति नाजा, तह
जहें कुचनी तहें बिपति निदाना॥

6) काम प्रोद्य अफ अहि अव,
नाथ नरक के पंथ।

6) जे हित रहे करत तेहि पीरा

6) तात राम नहिं नर भूपाता
भुवनेवर कलाहुं कर काला

6) नाथ न करहु मेहि प्रभुलाई

6) कहैं हनुमंत बिपति प्रभु सोई
जब तव अमुमिरन भजन न होई

6) सुवर्ण एक ओर में आना।

विद्युरत प्रान न कौन पयाना॥

नाथ सो नयनन्हि हैं अपराधा।

मिथरत प्रान कहैं दहि बाधा॥

वर्धमान का
६४ कलकत्ता रेडिओ नाम पुनर्गामी की,

[illegible]

10. Tell us why

1116.50 100 to 175. 1880

17007078 21 8-14-16 159 10110

11/11/1911

Principles of the Law

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

11. 11. 1913

Public Health

[illegible]

275 245 235 225 215 205 195 185 175 165 155 145 135 125 115 105 95 85 75 65 55 45 35 25 15 5

(Handwritten musical notation)

[illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100.

1500 to 1510 1510 to 1520 1520 to 1530 1530 to 1540 1540 to 1550

1 Oct. 1960 Sp. 416119

15th 10th 10th 10th 10th

1007 140 1373 1576

1790-1800

1895 200 210 220 230 240 250 260 270 280 290 300 310 320 330 340 350 360 370 380 390 400 410 420 430 440 450 460 470 480 490 500 510 520 530 540 550 560 570 580 590 600 610 620 630 640 650 660 670 680 690 700 710 720 730 740 750 760 770 780 790 800 810 820 830 840 850 860 870 880 890 900 910 920 930 940 950 960 970 980 990 1000 1010 1020 1030 1040 1050 1060 1070 1080 1090 1100 1110 1120 1130 1140 1150 1160 1170 1180 1190 1200 1210 1220 1230 1240 1250 1260 1270 1280 1290 1300 1310 1320 1330 1340 1350 1360 1370 1380 1390 1400 1410 1420 1430 1440 1450 1460 1470 1480 1490 1500 1510 1520 1530 1540 1550 1560 1570 1580 1590 1600 1610 1620 1630 1640 1650 1660 1670 1680 1690 1700 1710 1720 1730 1740 1750 1760 1770 1780 1790 1800 1810 1820 1830 1840 1850 1860 1870 1880 1890 1900 1910 1920 1930 1940 1950 1960 1970 1980 1990 2000 2010 2020 2030 2040 2050 2060 2070 2080 2090 2100 2110 2120 2130 2140 2150 2160 2170 2180 2190 2200 2210 2220 2230 2240 2250 2260 2270 2280 2290 2300 2310 2320 2330 2340 2350 2360 2370 2380 2390 2400 2410 2420 2430 2440 2450 2460 2470 2480 2490 2500 2510 2520 2530 2540 2550 2560 2570 2580 2590 2600 2610 2620 2630 2640 2650 2660 2670 2680 2690 2700 2710 2720 2730 2740 2750 2760 2770 2780 2790 2800 2810 2820 2830 2840 2850 2860 2870 2880 2890 2900 2910 2920 2930 2940 2950 2960 2970 2980 2990 3000 3010 3020 3030 3040 3050 3060 3070 3080 3090 3100 3110 3120 3130 3140 3150 3160 3170 3180 3190 3200 3210 3220 3230 3240 3250 3260 3270 3280 3290 3300 3310 3320 3330 3340 3350 3360 3370 3380 3390 3400 3410 3420 3430 3440 3450 3460 3470 3480 3490 3500 3510 3520 3530 3540 3550 3560 3570 3580 3590 3600 3610 3620 3630 3640 3650 3660 3670 3680 3690 3700 3710 3720 3730 3740 3750 3760 3770 3780 3790 3800 3810 3820 3830 3840 3850 3860 3870 3880 3890 3900 3910 3920 3930 3940 3950 3960 3970 3980 3990 4000 4010 4020 4030 4040 4050 4060 4070 4080 4090 4100 4110 4120 4130 4140 4150 4160 4170 4180 4190 4200 4210 4220 4230 4240 4250 4260 4270 4280 4290 4300 4310 4320 4330 4340 4350 4360 4370 4380 4390 4400 4410 4420 4430 4440 4450 4460 4470 4480 4490 4500 4510 4520 4530 4540 4550 4560 4570 4580 4590 4600 4610 4620 4630 4640 4650 4660 4670 4680 4690 4700 4710 4720 4730 4740 4750 4760 4770 4780 4790 4800 4810 4820 4830 4840 4850 4860 4870 4880 4890 4900 4910 4920 4930 4940 4950 4960 4970 4980 4990 5000 5010 5020 5030 5040 5050 5060 5070 5080 5090 5100 5110 5120 5130 5140 5150 5160 5170 5180 5190 5200 5210 5220 5230 5240 5250 5260 5270 5280 5290 5300 5310 5320 5330 5340 5350 5360 5370 5380 5390 5400 5410 5420 5430 5440 5450 5460 5470 5480 5490 5500 5510 5520 5530 5540 5550 5560 5570 5580 5590 5600 5610 5620 5630 5640 5650 5660 5670 5680 5690 5700 5710 5720 5730 5740 5750 5760 5770 5780 5790 5800 5810 5820 5830 5840 5850 5860 5870 5880 5890 5900 5910 5920 5930 5940 5950 5960 5970 5980 5990 6000 6010 6020 6030 6040 6050 6060 6070 6080 6090 6100 6110 6120 6130 6140 6150 6160 6170 6180 6190 6200 6210 6220 6230 6240 6250 6260 6270 6280 6290 6300 6310 6320 6330 6340 6350 6360 6370 6380 6390 6400 6410 6420 6430 6440 6450 6460 6470 6480 6490 6500 6510 6520 6530 6540 6550 6560 6570 6580 6590 6600 6610 6620 6630 6640 6650 6660 6670 6680 6690 6700 6710 6720 6730 6740 6750 6760 6770 6780 6790 6800 6810 6820 6830 6840 6850 6860 6870 6880 6890 6900 6910 6920 6930 6940 6950 6960 6970 6980 6990 7000 7010 7020 7030 7040 7050 7060 7070 7080 7090 7100 7110 7120 7130 7140 7150 7160 7170 7180 7190 7200 7210 7220 7230 7240 7250 7260 7270 7280 7290 7300 7310 7320 7330 7340 7350 7360 7370 7380 7390 7400 7410 7420 7430 7440 7450 7460 7470 7480 7490 7500 7510 7520 7530 7540 7550 7560 7570 7580 7590 7600 7610 7620 7630 7640 7650 7660 7670 7680 7690 7700 7710 7720 7730 7740 7750 7760 7770 7780 7790 7800 7810 7820 7830 7840 7850 7860 7870 7880 7890 7900 7910 7920 7930 7940 7950 7960 7970 7980 7990 8000 8010 8020 8030 8040 8050 8060 8070 8080 8090 8100 8110 8120 8130 8140 8150 8160 8170 8180 8190 8200 8210 8220 8230 8240 8250 8260 8270 8280 8290 8300 8310 8320 8330 8340 8350 8360 8370 8380 8390 8400 8410 8420 8430 8440 8450 8460 8470 8480 8490 8500 8510 8520 8530

धर्मशास्त्र

१ मेरी कौन बालि बालनाथ

२ देव उपनिषद् प्राप्त को,
निरागुनाहि बतावै॥

अकलवृत्त शिवान धरै नन
अकालि के पास ॥

३ कनि गोपाल की भव होई।
जो अपने पुनःसारव मानत,
बड़ा हूँ है भोई॥

४ भक्त पंथा को जो अनुसरै,
भो भोटावा ओला को करै।

५ कोसिक कर जगदीश निह।

कुरुकुनि-पल्ल, रेनुजन अडित

भक्त कवि जेप क्रि।

६ भक्त की पातले सुनारै।

भक्तवत्सल भक्तवत्सल ओई भोई कछु जावै।

७ भया कर्हिं बड़की चोरी।

किली बार भोई दूख पकल अई।

राह असई है छोरी॥

८ भया भोई दाउ बहुत ही खिझायो।

९ नंद शज कीलें गोविं बजाय

१० भूल हल जगदीश देखि जेरे,
भोहन के मुख जांवा।

११ लुबीने कुरुजी नंकु बजाउं

१२ खेलन तें को कोके अनुसंध्या

हरि हारे पतिने अनुदासा,
बरकस ही कल अल नैसंध्या।

१३ चरावत पुनदावन हरि धेनु

१४ आ हरि अद्युपुदी राजा

बड़े वंस कहाय।

१५ राजभूषन उंठा आजात

अहीर कल लजाय॥

12

- 12) खेलन हरि निकसे प्रतापेसी
 औचक ही देखि लई नाछा
 नैन किमाल आल दि दोरी
 भुर रयास बुझा ही राझे
 नैन नैन भिनि परि ठगोरी
- 13) बुझा रयास कोन तो गोरी
 कहाँ रहति काकी तु बूरी
- 14) खेलु दुलत उति ही री वाहि
 एष धार दोहमि पहुँचावन
 एष धार जहाँ प्यारी ठाढ़ी
- 15) तुम आगर अक वस आगर
 आगत भुख व्यवहार
- 16) मेहन महेन ठानेस
 भुकादि क
 नारदादि की ब्याभिनी
- 17) दुलहि दुलहा रयासा

18) अतिमलीन प्रसन्नानुकारी
 हरि प्रसन्नानु अंततन भीज
 ना लाज न धुवावति नारी

19) निमिषिन लखन नैन हमार
 नमन रहसि पावत प्रिय लखन
 जत त रयास सिधार

20) क्या कियो हरि लखन की सुखी
 क्ये क्ये रहै रूप रस रोचि
 नो वसियो भुनि कसि

21) लोचन जल काठक अरि मिलिये।
 लो लो रयास रयास की पानि ॥

22) आपुन कलि अरत कुलजा भंग
 लखि सिखावन जोगा।

23) मधुवन कुस फल रहत हरे
 लुस हो मिलन, लोचन नदी दुखी
 लखि लखि पुडप धार

24) उर को आखरी चोर जोड़े।
 उर कैसे निफसति जाहि,
 किरल रहे फूँ उड़ें।

२४) उसो वस न आ दस बीस
एक हुतो सो ओयो स्यास भंवा
को अववाधो दिस

२५) बिबु गोपाल वैविन भई कुंज,
तब यह लता लागती अति भीति।
अस भई भूविज लाला फी कुंज ॥

३०) अति लज्जाल भई ई पुस विन
बहुत दुखारी बाप भे हमार हरे
लखन की

३१) उसो को भिल कुजत फलन
पुस हंसो अभेस करत हो
भरस लागवत आनन

३२) उसो जाके आधे आग
कुटला को पशानी भुजो
हमहि देत वगवा

३३) हम तो कुछ अति फल पायो
हम हरि जिन्हें तो बिको
नामक जाला जस गोया

३५) उसो विरहो प्रेम को

३६) स्यास लाला बसो कस कुंज
अंतिहि का कह दिसार

३७) जाहें जाहें बहो राज कसो
तहें तहें जेहु ओटि निर-आर
उये लरफाई को प्रेम, कहीं अति कसो छुटै।

३८) बेरख न कप न बरन जाके नहि
लाको हमें लतावत
अपनी कहा कस लमे को
पुस कतहें हो लागत

३९) निरुजि कोन केस को बलि।
मधुकर टंकि भुझाय
भौंह दे, बुझति भौंच न होसि
को है जसक मननी को कहियत
को नहि को दासि

४०) फाह को बोकत आरव भूछो
भुजहु मधुप निरजु कटक
राजपंस क्यो ऊछो

४१) दाख हामि के कटक निर्दरि
के अपने भूंह बहै।
जाला ठगोसि ब्रज न विकहै

५३) हरि है राजनीति पीढ़ि आग।

इस अति अमृत दुनै पहच हो,

उमक करि नेह दिखाए।

जामि बुद्धि बड़ी पुबलिन को,

जोग मंदम पराए।

५४) राजधर्म अमर भए अमर।

जहाँ प्रजा न जाए अमर।

५५) मुरगनाम ऐसे क्यो निवहै

उद्याधुंछ अमर।

५६) राजनीति से नीति मनुजो हो

चरित बरिचर खेल

५७) यह अमर काजर की कोठी

जे आवहि ते कोरे।

पुस कोरे अमुकलकबुल कोरे,

कोरे मधुप अंगरे।

५८) आगो घोष बड़े व्यापारी

जादी खेप जुन अमान जोग की

ब्रज के आन अंगरी

५९) आगो जोगि बागम पपीडे

६०) उखो अंगी करि दुम आग

XXXX

६१) अमर अति पैल अंगो अंगो

अंगो अंगो के चो

६२) उखो पा जोगो पुस आग

पुस नय पाप जोगाए

६३) अंगो अंग अंगत उ केह अंगुल पार

अंगुल उडि अंगुल के पंक्ती,

६४) हरि कर राजधर्म आचर जोगी

अंगो अंगो अंगुल अंगुल हरि

६५) विनु बागम पावम अंगु अंगु

अंगुल के विद्वान,

अंगुल के अंगो अंगो अंगुल

अभ्युपगमः

१) भक्तन को कहे श्रीकृष्ण को काम

उपगत जात पहुँचा दूरी

कृष्णवर्णः

२) भुक्त काहे विधियात हो

वर्णवर्णः

३) जो अपने भुक्त जाहिं, और भुक्त आ कहैं ते।

बीज बिना तके उपरि ओहि

नंदवर्णः

तुल कहैं कहैं ते

४) फल दुष्कर, बंधु श्रीवा नाचि वे

मैं तो अपने नायाय की

आपहि होवाइ कभी वे

जोवा कहैं श्रीवा अइ आवनि

(श्रीवा)

५) ओहन वह क्यो प्रति विभक्ति

कहत भुक्त भक्तभुक्त उर अंतर

दुरा जागत है आनि (परमानंदवर्णः)

६) या भुजगी कृष्णलील की

अधरान धमि अधरान धमि

वर्णवर्णः

विहारी

१) गीता कवि वरुण, गीता कवि

अवस वाग बरि बरि।

अनखड़े छड़े निवे,

जे छड़े अव अंग।

२) अंग अंग नवा जगत्सुखी,

दीपजिह्वा की कहैं।

दीया बुझाए हव भेदा,

वडा उजरो गेह ॥

३) पतल सिं तिहि पाइए, वा पद के चहुँपस।

जिन प्रीत धुन्योहि बहे, आनन ओस उजस।

४) आपने अंग के पानि, पानि भुक्त भुक्त

वनन मन नैन निरंतर की, वडा इजाफा कीन।

५) गदगद नव बोहरि, ऐपन आइ जिह्वा।

दूरयो दे दूरयो दूर, कहे गोपनि भुक्त।

६) वरुणगिरि संजनु हिय, कैंजनु संजनु देन।

अंजनु संजनु हूँ निजा, खैंजनु अंजनु नैन।

७) कहत नटन बीकान श्रीकान्त,

मिलन मिलन, पानिपान।

दोरे ओझी के कहे गान ॥

३) वलरम लावाच जोरा फी
मजली धरि लुफादि।
मोंद केर भोंठनु हंस देन कहे
नट जाइ ॥

४) में लोमो केवा कहे,
जो ठू कहे पलाइ।
जोवालावा लोकावु,
उर के जाइ-जाइ ॥

५) कावाफ पर लिखल नः लजल,
कहत अंवेक अजल।
कहिहें सब लो हिय,
अबो हिय की बात ॥

१०) इत आपत चलि जात उत,
चलि छु आतक लख।
चलि डिङ्गे की रई,
जानी उरमावनि आवा ॥

११) आपत बुझावत विरह की,
कपट झरत आदि।

१२) बाली बाली आपन कीची
बुहकसा बाली।

१३) अउर्यो लरयोना हि बहयो,
अरुति केवत छक रंग।
नाथ बास बसरी लख्यो,
बलि मुकुतनु के भोग ॥

१४) कनाक कनाक ते रों बुरि,
आपफा अंधिफाया।
या रणा बाया नर,
वा था बाया ॥

१५) दीरघ भोग न जेहि दुख,
मुरख भाइहि न भुल।

१६) आप आता लोपा दिवक,
भरो न एको कास।
अन काँचे जाचें दया,
भोंचें रोंचें रास ॥

१७) चित पितुमारफ आब (बुनि)
आयो भये मुत भोग।

फिर दुखयो दिखे जाइसी,
बेभुई जावत जात ॥

१४) स्वारथ मुक्त न प्रभु, सुख,
देखि सिंह बिचारि।
बाज पनारै पानि परि,
इ पच्छीनु न मारि॥

१५) नहिं पनाग नहिं भयुर मधु,
नहिं विकास एहि काल।
अलि कलि ही में बंछ्यो,
आगे कौन हवाल॥

२४) कहति न देवर की कुसति
कुवतिय फलह डराति।
पंजर गत मंजार दिग,
भुक को भुक्ति जाति॥

२५) तेरी भव बाधा हवै,
राधा नागरे भोधि।
जा तन की क्षाई पडत,
स्याम हसि दयति होधि॥
अथ अमरुग्री सिद्ध की, गति समुझा नहिं कछ
उयो - ज्यो बूढ़े स्याम रंठा, ज्यो-त्यो उज्जल
हयि॥

२३) वंशु आ का दिन के को तान्यो रेबुनाइ।
पूठे बूढ़े फित ह, श्रेष्ठ तिरुफ कथाइ॥

२४) कनित भुंग बांदावली,
वारित दन मधु नीका।
मंफ संप आसु चढ्यो,
कुंजर कुंज मसीक॥

२५) देखि दुपहरि जेठ की,
दोनों चाहति छोट।

२६) रनि कज्जल चख शख लखन
उपजो भुदिन भनेड
भयो न सुपति हूँ भोगवै
नहि भुदेनु सब दह

२७) अंगलु विंदु भुरंगु भुसु भसि,
कंसकी आपु वडकी
एफ नारि लहि भंगु,
बसमय किय कोचन जगत।

२८) नेतुन नेननु को, बिच्छु उपजि लड़ी लारा।
नीर भरे भिसपति रहै, तउ न व्यास प्रभाव

२९)

अरे चार जाग आरापुर, क्या न आने हो गीरे
को धरि हो एक आगुजा व दलखरे के

36) वहति न बज आर आहि भुख लखि,
आखन की फौज।

अरे भलभइया के दोहरे, जे नाविक के गिर
दखन के छोर लखे धारा के वांझिरे

केशवदास का काव्य

1) भात कहे पृथगत? क लखि विजयत?।
गाए भुवनकानि।

क्यों? शोक लहे।

2) आभा गति न आनहि, भिन्ने कुल के दास
आभा कवि ओ अंजनहि लेहि फुल के शिवदास

3) चह्यो राजा लोक धारा,
दिनकर जानर अकल भुख।

4) अदहि भुजगि भुल चकनि,
भुवन भुवन भुवन।

भुवन विनु न भिजाने,
कविता गजिला मित ॥

5) रास को कल कला, बिनु जीतहि।
कोन कहे द्विष्ट जीतो कहा है।

6) ओ। धी। सी। धी।
रास लख अरु धाम।

7) शायन सो। लखि जा। भुवनकानि।
भुवनकानि।

8) भुवनकानि।
भुवनकानि।

पदमाकर प्रभाव

१ गुरुगुरु विरा में गङ्गीचा है,
गुनीजन हैं चोपनी हैं,
सिक है चिराजन की आला है।
कहै पदमाकर उयो गजप विजा है अगु,
सो जा है सुगरी है,
सुजा है और आला है।

२ या अगुगुग की मारा लखै,
जहाँ गजत गारा फिरोर बिगोरी।
गोविन के भँगा झुझिओ भोउरो,
भोउरे के भँगा झुझिओ गेरी।

३ पावस बनाओ लो फिर न बनाओ।
जो फिर बनाओ लो पावस न बनाओ॥

४ या गजगजिन को है यह कर,
जो छल छोड़ि अउर रघुनाथ।
५ भैषण कुबेर की सुमेर की, जो भौं लहि।
६ गज गजगज विरहि उर छोड़े ना।
७ अगुग लखै लखै अहाई/ प्रताप चि विरहि के अउर पहाँ है

वैभानंद प्रभाव

१ गोजा है लखि कवित्त बनावन,
गोह लो आने कवित्त बनावन।
२ अगुग सुखो सुमेर को मारा है,
जहाँ नकु अगुगन बाँक नहिं।
३ गज कोन धौ पाटि पढ़े हो लीला,
मन कोह पैं दहु छटाप नहिं।
४ उजगनि वसि है लखारि अँखियानि देखौ,
जो रूप अगुगो राखे, जेख राखे राखे
तेस मखिरे को प्रजगोहन वहुत अलखै
भाखै॥

५ दसि प्रियो न सियो दल-आनंद
कावरे भँगा अगुगान वधु के

अन्य परिभाषा

१) केने मरि डारे और केतक पछाइ ठहरे।
केतक बजाइ डारे, काकी कोपी लखि।

२) भवा लाय मे एक लडाके
मिडियो मे मे बाज लडाके
तो गोविंद सिंह नाम कहाके

३) लज लस अंज पर
काह जिम केस पर
रसो केजंदक वंस पर
मेर सिवराज है।

४) इति भुआषा कलिन्स की
वरना पुष्ट अनुसर। (चिल्लाये)
डो छाय की इति सिन्धी भुक्तीन मे

५) अपनी-अपनी इति के काय,
और कवि इति (देव)

६) डल मे लनाय आय,
भला भुआ के वीच।
लावा कलिन्स की गो,
बल करि आगे है।

७) अपनी पहुँच बिचरि के,
कलस करि कीड,
तो पो भुआरि,
जिनि लखी और ॥

८) भवभुति के झंडर की, बड़ी अपुनत बात
उयो उयो खरचे रसो लखे,
किन्तु खरचे छोटि आत।

९) भले भलायक भल के, कोउ न मिल
भलाय।
पवन लखत आवा को दीपहि देत पुआय

१०) आत हमारी भल है

आत पिता है नाम
बिरह हमारा भुज है
अनहद के बिराम

११) लाली जन्मनी जगत की,
पाल पोस दे पोष।
पुनरु नाम बिराम कर,
लाहि लोवात दास ॥

१२) और वह भनक भनक
लाद ला बिबि की
लभक लभक लखे भनक
भुजिनि की।

५. (॥) सिद्धि प्रथम आदिन्य

- १) पंडित अमल अत्य व कथावाह, देहहिं सुदृढ वमन व। जागता ॥
- २) आताम वेअ पुणेहि पण्डित आण वहेसि। पक्क सिद्धिकले अजिअ प्रिसा वाहेरिअ अचंसि ॥
- ३) अहि आण पवण जे अचरु, अवि असि पाह पवेस। नाहि वरं चित्त विभास करु, समरेहे कटहु डवेस ॥
- ४) गाद न विन्दु न अग्नि न मंडल, चित्रराज अहावे धुक्ल ॥

(॥) अहं भगवत् महिम्नं विनाशयितुं न शक्यम् ॥
(॥) अहं भगवत् महिम्नं विनाशयितुं न शक्यम् ॥

(॥) अहं भगवत् महिम्नं विनाशयितुं न शक्यम् ॥
(॥) अहं भगवत् महिम्नं विनाशयितुं न शक्यम् ॥

બોલિલા નામના ગાથા

૧) હવેકિ ન ચલિલા રવકિ ન ચલિલા, કલકિ ન
ધીરે ધરિલા કોવ । કલકિ ન ચલિલા રવકિ ન
ચલિલા ન કલિલા મેહલે રહિલા,
શીખાંત ગોરસ નામ ॥

૨) જો નાચ પાતરિ આંગે બાચે, નાચ નાચ
પીલે મેહલ અચ્છાકા ! નાચ નાચ નાચ
એમો જાન લે જાગે ચેલે, નાચ નાચ નાચ
નાચ કીરિ વસે કીરિ ॥ ગોરસનાથ

૩) જોગી શેરે આંગે, નાચ નાચ નાચ
જાગે તે રહે રવસ ॥ (અચ્છનાથ)

૪) નેલે હે દુઆ જાગે હોલા,
રુક હો રુકો આંગે ॥

(અર્પણનાથ)

૫) જાથ બોલે અચ્છનાથ,
વરસેગી વચ્છલી શીખા પાંગે ॥

કેસવનંદ

૧) સગલા વિમાહિત ખાહિ લોહકું
પિચ નાહિ વચ્છલિ ખાક ॥

૨) જિહિ ખાચકી લોહકું
ગાલિ અગિયડા ન લીસ ॥

૩) અલ્લા કુઆ ખૂ અરિયા,
ગહિલી કહાસા કાન્ત ॥
નાજેખે તુ નાચકિલક, નાચકિલક
ખાદ અલ્લા વચ્છલ ॥

વિદ્યાપાત્ર

૧) ખાહિ ખાહિ કલકા અંભા,
તહે તહે લીચુરિ તરંગા ॥

૨) સૈયમ ખાલન કુહ જિલિ લોન ॥
સૈયમક પેષ કુહ લોચન લોન ॥

૩) હે અચ્છિ વચ્છલ ઉક અપકપ
જુનકા આંગે અપન સકપ ॥

૪) બાચાવ લોજા અચ્છુરી લાગી ॥

इमं हि ते भूयानि अनुभवात्वाय।

उत्तमं अद्यपि भारं केषु जिह्मन्तु,
नयनं न विरपति भूतम्।

६ भारं बहलं दूरं हंसं मधुरापुरं

एतद् भूयः परान्

ये कानिनी कण्ठं भोजनं,

हेमिदं हि हृदयं हृन्तात् प्रचयान्।

७ भवन्मयं वणिं लुहजलं आवद्धं

पात्रं अस्मिन् कौ अस्मिन् न पात्रम्।

देसिन्त वयला भव जगत् मिथ्या,

ते न भवन्तं ज्ञेयम्।

८ ज्ञानं च विज्ञानं च आत्मा

दुष्टं न हि ज्ञानं दुष्टं न हि ज्ञानम्।

९ हिन्दुं तुल्यं मिथ्या ज्ञानम्

एकं धर्मम् अस्माकं वासम्

कतद् धर्मं कतद् वेदं

कतद् विभिन्नं कतद् धर्मम्

१० अयं अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

११ अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

१२

अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

अयं धर्मं आत्मा भिद्यते।

अमीर सुभारी

१) एक शाला गोरी से आजा,
 अचके फिर ओंछा धरा।
 चले अमे वह शाला फिर,
 मेरी उलसे एक न गिरे ॥

२) पान क्यों अडा?
 छोड़ क्यों अडा?
 क्या न था।

३) क्या सोने बिंगार करारन,
 ओछे डेठिके जान बढावन।
 दोहे लिखन न कोठ दीसा,
 ते अमि आजन। न अखि सीसा।

४) और बनाई जनन है, चरखा दिया चलाय।
 जानर दुत्ता खा लप्पा, वैरि दोन बजाय ॥

५) कहे को बियाहे परदेस
 कुरु बाबुल मोरे।
 मेरा तो कुरु बाबुल,
 मेरे अरे के होया।
 हमी-दूकी भाऊ परदेस।

६) जो हाल मिमकीं अकुन गयो। फल,
 दुराय नेना बना। वरिया।

कि लोबे डिजा न दारस ल जा,
 न लोहु काहे लोवाए ललिया।

७) उज्जल बरन अमलन लन,
 एक चित्त दो दयान।
 देखत में लो आछूट,
 निपर पाप की खान ॥

८) छाप मित्रक भव टहीनी,
 ओसे नेना मिजार्कि।

९) खुसरो डेन अमुहावा की,
 में लो जाहि पी. के अंठा।
 लेन सेरो लन किउ को,
 दाउ अट एक रंठा ॥

१०) गोरी ओवे अेल पर,
 अख पर डार बेस।

पल खुसरो पर आपने,
 रैन अइ चहुँ दस।

११) खुसरो करिया। मेस का,
 उलही वकि धार।

जो अला से डूब गया,
 जो डूबा ओ पार ॥

—पंच वरदायी

१) निराधार आधार करता हूँ ही।

२) उक्ति धर्म विशालम्,

नाजनीति नवं नमः।

षट्धाका पुत्रानं च

पुत्रानं कथितं मेया ॥

३) वज्रिज्ज वेर निमज्ज

उपेठि राज पुत्रीराज

वाजा मेना वीर जट।

कट्टे तेज मेज्जवा लज्ज

मेज्जो बीज्ज कट्टे धर ॥

४) चार कोणा चौकीस राज

आरु अरुण प्रसादा ॥

गी अरु सुज्जलात्त है

आरु चारौ चोखिज ॥

५) भोजन उ अरु अरु अरु अरु

छैकु चज्जु पिउ अलिउ नम

६

प्रकार भाषा

प्रकार भाषा एक प्रकार का भाषा है।

प्रकार भाषा एक प्रकार का भाषा है।

શામે કાવ્ય

૧) અવર અવર અર ગોલી વરમે
કરે અમિનિયા વાન

ચે કોરહ વરમે લો કુકર પ્રિટ,
ઓર વેરહ લો પ્રિટ મિયાર/
વરમે અરવરહ દાનિય પ્રિટ,
મેગો ખેલન કો દિવસાર।